Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

गोंड जनजातियों में प्रचलित तीज-त्योहारों का सांस्कृतिक महत्व

नरेन्द्र कुमार भारद्वाज* डॉ. मंजू साहू**

* शोधार्थी (इतिहास) डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** शोध निर्देशिका (इतिहास) डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – भारत की जनजातीय परंपराएँ देश की सांस्कृतिक विविधता का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जिनमें गोंड जनजाति की सांस्कृतिक विरासत विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह अध्ययन गोंड समुदाय में प्रचलित प्रमुख तीज-त्योहारों जैसे मड़ई, करमा, पोला तथा नवा खानी के सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं पारिस्थितिक महत्व का विश्लेषण करता है। शोध का उद्देश्य यह समझना है कि ये त्योहार किस प्रकार गोंड समाज की सामूहिक पहचान, पारंपरिक ज्ञान और प्रकृति के साथ उनके गहरे संबंध को सुदृढ़ करते हैं। अध्ययन में वर्णनात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों- जैसे पुस्तकों, शोध-पत्रों एवं सरकारी रिपोर्टों- के साथ-साथ संदर्भित जनजातीय अध्ययनों का विश्लेषण शामिल है। निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि गोंड जनजाति के त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक एकता को प्रोत्साहित करते हैं, सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित रखते हैं और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करते हैं। उदाहरणस्वरूप, करमा उत्सव वृक्ष-पूजा के माध्यम से प्रकृति संरक्षण का संदेश देता है, जबकि नवा खानी कृषि चक्र और आभार व्यक्त करने की परंपरा को दर्शाता है। आधुनिकता, शहरीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण इन पारंपरिक उत्सवों में कुछ परिवर्तन अवश्य आए हैं, फिर भी ये त्योहार गोंड समाज की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभा रहे हैं। अध्ययन यह सुझाव देता है कि इन परंपराओं के संरक्षण हेतु शैक्षिक, सामाजिक एवं नीतिगत स्तर पर विशेष प्रयास किए जाने चाहिए, ताकि यह सांस्कृतिक धरोहर आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सके।

शब्द कुंजी – गोंड जनजाति, तीज-त्योहार, संस्कृति, परंपरा, जनजातीय अध्ययन।

प्रस्तावना – भारत की जनजातीय संस्कृति अपनी विशिष्ट जीवनशैली, परंपराओं और प्रकृति-आधारित दृष्टिकोण के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह संस्कृति न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से समृद्ध है, बल्कि इसमें मानव और प्रकृति के बीच संतुलन की एक गहरी समझ भी निहित होती है। भारत की प्रमुख जनजातियों में गोंड जनजाति का विशेष स्थान है, जो मुख्यत: मध्य भारत के राज्यों- विशेषकर छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र-में व्यापक रूप से निवास करती है। गोंड समुदाय अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, लोकपरंपराओं, रीति-रिवाजों और तीज-त्योहारों के लिए प्रसिद्ध है, जो उनके सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग हैं। गोंड समाज में त्योहार केवल मनोरंजन या उत्सव तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे सामूहिक जीवन की संरचना और सांस्कृतिक निरंतरता के प्रमुख आधार के रूप में कार्य करते हैं। इन त्योहारों के माध्यम से सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ किया जाता है तथा समुदाय के भीतर सहयोग, एकता और सहभागिता की भावना विकसित होती है। इसके अतिरिक्त, ये उत्सव पारंपरिक ज्ञान, लोककला, लोकगीत और नृत्य के संरक्षण तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक उनके हस्तांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

धार्मिक दृष्टि से भी गोंड जनजाति के त्योहार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इनमें देवी-देवताओं, पूर्वजों और प्रकृति के विभिन्न तत्वों की पूजा की जाती है। विशेष रूप से वृक्ष, जल, भूमि और पशुओं के प्रति सम्मान की भावना इन त्योहारों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जो उनके प्रकृति-केंद्रित जीवन दृष्टिकोण को दर्शाती है। इस प्रकार, गोंड समाज के त्योहार न केवल उनकी सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करते हैं, बल्कि उन्हें प्रकृति के साथ संतुलित और सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं (जाक्सा, 2014)।

संबंधित साहित्य की समीक्षा – गोंड जनजाति तथा अन्य भारतीय जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक परंपराओं पर विभिन्न विद्वानों ने समय-समय पर अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। वेरियर एलविन (1964)) ने अपने शोध में जनजातीय जीवन को प्रकृति-केंद्रित बताया है और यह स्पष्ट किया है कि उनके त्योहार सामाजिक संगठन तथा सांस्कृतिक पहचान के प्रमुख साधन होते हैं। उनके अनुसार, जनजातीय उत्सव केवल धार्मिक क्रियाएं नहीं बल्कि सामूहिक जीवन की अभिव्यक्ति हैं। इसी प्रकार के. एस. सिंह (1992) ने भारत के लोगों को परियोजना के अंतर्गत विभिन्न जनजातियों के त्योहारों को सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक निरंतरता से जोड़ा है। उनके अध्ययन में यह पाया गया कि गोंड समुदाय में त्योहारों के माध्यम से सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ किया जाता है तथा सामूहिक पहचान को बनाए रखा जाता है। वर्जिनियस जाक्सा (2014) ने आधुनिक संदर्भ में जनजातीय समाज में हो रहे परिवर्तनों का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि वैश्वीकरण के प्रभाव से पारंपरिक त्योहारों में परिवर्तन हो रहा है, परंतु उनकी मूल सांस्कृतिक भूमिका अभी भी बनी हुई है। इसी क्रम में ए. एन. शर्मा (2010) ने भारतीय जनजातीय त्योहारों को सांस्कृतिक विरासत के रूप में प्रस्तुत किया है और यह बताया है कि ये उत्सव पर्यावरणीय संतुलन और सामाजिक समरसता के प्रतीक हैं। उपरोक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि गोंड जनजाति के त्योहारों पर

पर्याप्त कार्य हुआ है, किंतु उनके स्थानीय संदर्भ (विशेषकर छत्तीसगढ़ क्षेत्र) में सांस्कृतिक महत्व के विस्तृत विश्लेषण की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व – वर्तमान युग में वैश्वीकरण, शहरीकरण और आधुनिक जीवनशैली के कारण पारंपरिक संस्कृतियों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। ऐसे में गोंड जनजाति के तीज-त्योहारों का अध्ययन कई दृष्टियों से आवश्यक हो जाता है :

- यह अध्ययन गोंड समाज की सांस्कृतिक पहचान को समझने में सहायक है। त्योहारों के माध्यम से उनके जीवन-मूल्य, विश्वास और परंपराएँ स्पष्ट होती हैं।
- यह शोध सांस्कृतिक संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
- यह अध्ययन शैक्षिक दृष्टिकोण से भी उपयोगी है, क्योंकि इससे छात्रों और शोधार्थियों को जनजातीय जीवन के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है।
- यह शोध पर्यावरणीय जागरूकता को भी बढ़ावा देता है, क्योंकि गोंड समाज के त्योहार प्रकृति और पारिस्थितिकी से गहराई से जुड़े हुए हैं।

अध्ययन के उद्देश्य – इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- गोंड जनजाति में प्रचलित प्रमुख तीज-त्योहारों का अध्ययन करना।
- इन त्योहारों के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक महत्व का विश्लेषण करना।
- त्योहारों के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान और मूल्यों के संरक्षण की भूमिका का अध्ययन करना।
- आधुनिक संदर्भ में इन त्योहारों में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत अध्ययन में गोंड जनजाति के तीज-त्योहारों के सांस्कृतिक महत्व को समझने के लिए विभिन्न शोध प्रविधियों का समन्वित रूप से उपयोग किया गया है। मुख्य रूप से दस्तावेजीय विश्लेषण के माध्यम से पुस्तकों, शोध-पत्रों तथा सरकारी रिपोर्टों का अध्ययन किया गया, जबकि विषयवस्तु विश्लेषण द्वारा त्योहारों के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पहलुओं का वर्गीकरण एवं व्याख्या की गई। इसके साथ ही, जनजातीय जीवन की गहराई को समझने हेतु मौखिक परंपराओं– जैसे लोकगीत, कथाएँ और पारंपरिक मान्यताएँ– को भी शामिल किया गया। अवलोकन प्रविधि के माध्यम से त्योहारों से संबंधित अनुष्ठानों एवं गतिविधियों की समझ विकसित की गई, जबकि तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर विभिन्न त्योहारों के बीच समानताओं और भिन्नताओं का विश्लेषण किया गया। इस प्रकार, इन सभी प्रविधियों के संयुक्त उपयोग से अध्ययन को अधिक व्यापक, संतुलित और विश्वसनीय रूप प्रदान किया गया है।

गोंड जनजाति: एक परिचय– गोंड जनजाति भारत की प्रमुख और व्यापक रूप से पाई जाने वाली जनजातियों में से एक है, जिसका ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व अत्यंत समृद्ध रहा है। यह जनजाति मुख्यत: मध्य भारत के क्षेत्रों– जैसे छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और ओडिशा में निवास करती है। गोंड समाज की सामाजिक संरचना कबीलाई प्रणाली पर आधारित होती है, जिसमें विभिन्न कुल या गोत्र होते हैं। प्रत्येक कुल की अपनी विशिष्ट पहचान, परंपराएँ और नियम होते हैं, जो सामाजिक जीवन को व्यवस्थित और संतुलित बनाए रखते हैं। गोंड समुदाय का जीवन प्रकृति के साथ गहरे संबंध को दर्शाता है। उनके धार्मिक विश्वास और सांस्कृतिक गतिविधियाँ प्रकृति के तत्वों– जैसे वृक्ष, नदियाँ, पहाड़, भूमि और पशु-पक्षी– से घनिष्ठ रूप से जुड़ी होती हैं। वे इन प्राकृतिक तत्वों को केवल संसाधन के रूप में नहीं, बल्कि पवित्र और पूजनीय मानते हैं। विभिन्न अवसरों और त्योहारों पर इनकी पूजा-अर्चना की जाती है, जो उनके प्रकृति-केंद्रित जीवन दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है। गोंड समाज में सामूहिकता, सहयोग और परंपरागत मूल्यों को विशेष महत्व दिया जाता है। उनके रीति-रिवाज, लोककला, नृत्य और गीत उनके सांस्कृतिक जीवन की पहचान हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहते हैं। इस प्रकार, गोंड जनजाति न केवल अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखती है, बल्कि प्रकृति और समाज के बीच संतुलन बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण उदाहरण भी प्रस्तुत करती है।

प्रमुख त्योहार और उनका सांस्कृतिक महत्व – गोंड जनजाति के त्योहार उनकी जीविका, आध्यात्मिकता और सामाजिक संरचना के प्रतिबिंब हैं। इन पर्वों का विस्तृत विवरण निम्नलिखित है:

- **बिदरी: कृषि नववर्ष का संकल्प –** बिदरी केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि गोंड समाज का 'कृषि नववर्ष' है। यह पर्व मानसून की पहली फुहारों के साथ, जून के महीने में मनाया जाता है। इस दिन गाँव का पुजारी (बैगा या भूमिया) सामूहिक रूप से बीजों की पूजा करता है। ग्रामीण अपने घरों से बीज लाकर एक स्थान पर एकत्रित करते हैं, जहाँ मंत्रोच्चार के साथ उनका शुद्धिकरण किया जाता है। यह परंपरा दर्शाती है कि गोंड समाज में व्यक्तिगत लाभ से ऊपर 'सामुदायिक सुरक्षा' और 'खाद्य संप्रभुता' को रखा जाता है। यह पर्व धरती के प्रति समर्पण का प्रतीक है।
- **बकपंथी : पारिस्थितिक संतुलन का पर्व –** सावन की हरियाली के बीच मनाया जाने वाला यह त्योहार पशु जगत के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का माध्यम है। गोंड संस्कृति में पशु केवल संपत्ति नहीं, बल्कि परिवार के सदस्य माने जाते हैं। बकपंथी के दिन गायों और बैलों को विशेष रूप से सजाया जाता है और उन्हें खिचड़ी खिलाई जाती है। यह उत्सव 'एकीकृत कृषि प्रणाली' के उस दर्शन को पुष्ट करता है, जहाँ मनुष्य, प्रकृति और पशु एक सहजीवी चक्र में बंधे हैं।
- **नवाखाई: विरासत और कृतज्ञता का मिलन –** जब खेतों में फसलें सुनहरी होने लगती हैं, तब 'नवाखाई' या 'नवाँ' का आयोजन होता है। इस त्योहार का मुख्य उद्देश्य 'प्रथम फल' का अर्पण है। गोंडों की मान्यता है कि नई फसल का उपभोग तब तक वर्जित है जब तक उसे कुलदेवता (पेन) और पितरों को अर्पित न कर दिया जाए। यह परंपरा आने वाली पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जोड़ती है और यह सिखाती है कि हमारी आज की समृद्धि हमारे पूर्वजों के श्रम और आशीर्वाद का फल है।
- **मड़ई: सामाजिक समरसता का महाकुंभ–** बस्तर से लेकर मध्य प्रदेश के गोंडवाना क्षेत्रों तक, 'मड़ई' गोंड संस्कृति का सबसे जीवंत और रंगीन उत्सव है। मड़ई में 'अंगा देव' (काष्ठ निर्मित देवता) को डोली में बिठाकर लाया जाता है। यह उत्सव केवल धार्मिक नहीं, बल्कि एक वृहद् सामाजिक मंच है। यहाँ अलग-अलग गाँवों के लोग मिलते हैं, जिससे आपसी विवादों का निपटारा होता है और नए वैवाहिक संबंध तय किए जाते हैं। यह पर्व गोंडों की संगठनात्मक शक्ति और उनकी 'लोक-कला' (नृत्य, संगीत, हस्तशिल्प) के प्रदर्शन का वैश्विक झरोखा है।
- **करमा उत्सव: भाग्य और कर्म का संतुलन –** भाद्रपद मास में मनाया जाने वाला यह त्योहार गोंडों के सबसे महत्वपूर्ण लोक नृत्यों और पर्वों में से एक है। इसमें 'करम' वृक्ष की शाखा को आंगन में रोपा जाता है। यह त्योहार इस दर्शन पर आधारित है कि 'कर्म' ही भाग्य का निर्माता है। सामूहिक

करमा नृत्य के माध्यम से युवा पीढ़ी को सामुदायिक श्रम और उत्साह का संदेश दिया जाता है।

- **मेघनाद पर्व: वीरता और संरक्षण का प्रतीक–** फाल्गुन के महीने में, विशेष रूप से मध्य भारत के गोंडों द्वारा 'मेघनाद' (जिन्हें वे अपना रक्षक मानते हैं) की पूजा की जाती है। एक ऊँचे स्तंभ (खंभा) की पूजा की जाती है, जो शक्ति और सुरक्षा का प्रतीक है। यह पर्व गोंडों के अपने विशिष्ट पौराणिक नायकों और इतिहास के प्रति उनके सम्मान को दर्शाता है, जो उन्हें मुख्यधारा की कथाओं से अलग एक अनूठी पहचान प्रदान करता है।
- **डोडबलि: मृदा संरक्षण का पर्व–** यह त्योहार मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इसमें मिट्टी के प्रतीक बनाकर उनका पूजन किया जाता है। यह आधुनिक युग के 'मृदा संरक्षण' के विचार को सदियों पहले से ही अपनी परंपरा में समेटे हुए है।

लोक संगीत और नृत्य का स्थान: सांस्कृतिक चेतना के स्वर– गोंड जनजाति के तीज–त्योहारों की परिकल्पना संगीत और नृत्य के बिना असंभव है। उनके लिए संगीत केवल मनोरंजन का साधन मात्र नहीं है, बल्कि यह उनकी सामूहिक चेतना और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। जब 'मांदर' (मिट्टी से बना एक विशेष वाद्ययंत्र) की गूंज जंगलों और पहाड़ियों में गूँजती है, तो वह केवल एक ध्वनि नहीं, बल्कि गोंड समुदाय के हृदय की धड़कन बन जाती है। 'करमा' जैसे पारंपरिक नृत्य इस संस्कृति के प्राण हैं। मान्यता है कि करमा नृत्य के दौरान नर्तकों के थिरकते कदम और मांदर की थाप के बीच जो सामंजस्य बैठता है, वह मनुष्य को ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ एकाकार कर देता है। यह नृत्य प्रकृति के प्रति उनके समर्पण और जीवन के उतार–चढ़ाव को स्वीकार करने के दार्शनिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

इन उत्सवों के दौरान गाए जाने वाले लोकगीतों का ऐतिहासिक महत्व अत्यंत गहरा है। गोंड समाज में लिपिबद्ध इतिहास की तुलना में 'मौखिक परंपरा' अधिक समृद्ध रही है। उनके गीतों में केवल प्रेम या प्रकृति का वर्णन नहीं होता, बल्कि उनमें उनके पूर्वजों की वीरता, गोंडवाना साम्राज्य का वैभव और उनके संघर्षों की गाथाएँ समाहित होती हैं। ये गीत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान और संस्कृति के हस्तांतरण का कार्य करते हैं। उदाहरण के तौर पर, 'पंडवानी' या 'बांस गीत' के माध्यम से वे अपने विशिष्ट पौराणिक पात्रों और सामाजिक मूल्यों को जीवंत रखते हैं। इस प्रकार, गोंड समाज का संगीत उनकी 'सांस्कृतिक स्मृतियों' का संरक्षक है, जो आधुनिकता के प्रवाह में भी उनकी मौलिक पहचान को सुरक्षित रखे हुए है।

निष्कर्ष– गोंड जनजाति के तीज–त्योहार उनकी सांस्कृतिक पहचान के मूल आधार के रूप में कार्य करते हैं और उनके सामाजिक जीवन की संरचना को सुदृढ़ बनाते हैं। ये त्योहार केवल उत्सव या परंपरा का निर्वहन नहीं हैं, बल्कि इनके माध्यम से समुदाय में आपसी सहयोग, सामूहिकता और सामाजिक समरसता की भावना विकसित होती है। साथ ही, ये उत्सव पारंपरिक ज्ञान, लोककला, लोकगीत एवं रीति–रिवाजों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम भी हैं। इन त्योहारों का एक महत्वपूर्ण पक्ष उनका प्रकृति से गहरा संबंध है, जो पर्यावरणीय संतुलन और संरक्षण के प्रति जागरूकता को दर्शाता है। वृक्षों, भूमि, जल और पशुओं के प्रति सम्मान की भावना इन उत्सवों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जिससे यह सिद्ध होता है कि गोंड समाज का जीवन दृष्टिकोण प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व पर आधारित है।

वर्तमान समय में शहरीकरण, आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभाव से इन पारंपरिक उत्सवों में परिवर्तन की प्रवृत्ति देखने को मिल रही है, जिससे इनके मूल स्वरूप के क्षीण होने की आशंका भी उत्पन्न होती है। अत: यह आवश्यक है कि इन सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सामाजिक, शैक्षिक तथा शासकीय स्तर पर समन्वित प्रयास किए जाएँ। अंतत:, यह कहा जा सकता है कि गोंड जनजाति के तीज–त्योहार न केवल उनकी सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक हैं, बल्कि वे समाज को एकता, संतुलन और प्रकृति के प्रति सम्मान का संदेश भी प्रदान करते हैं। इसलिए, इन परंपराओं को सुरक्षित रखना और आने वाली पीढ़ियों तक हस्तांतरित करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि यह अमूल्य सांस्कृतिक विरासत भविष्य में भी जीवंत बनी रह सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार (2023) भारत में जनजातीय विकास पर वार्षिक प्रतिवेदन, नई दिल्ली: भारत सरकार।
2. छत्तीसगढ़ जनजातीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, (2018) छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति, रायपुर: छत्तीसगढ़ शासन।
3. जाक्सा, वी. (2014) भारत में जनजातियाँ, नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. वर्मा, आर. सी. (2012) युगों के माध्यम से भारतीय जनजातियाँ, नई दिल्ली: प्रकाशन प्रभाग।
5. भारत सरकार, (2011) भारत की जनगणना: अनुसूचित जनजातियाँ, नई दिल्ली: भारत सरकार।
6. शर्मा, ए. एन. (2010) भारत में जनजातीय संस्कृति और त्योहार, नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
7. सिंह, के.एस. (1992) भारत के लोग, कोलकाता: भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण।
8. एल्विन, वी. (1964) वेरियर एल्विन की जनजातीय दुनिया, लंदन: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

****